मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2019 marumegh
ISSN:2456-2904

फलदार पौधों की रोपाई एवं देखभाल की वैज्ञानिक विधि

प्रणय प्रसून पाण्डेय* एवं मधु सुमन
डिपार्टमेंट ऑफ़ बायोलॉजिकल साइंसेज
सैम हिग्गिन्बोटम कृषि, तकनिकी एवं विज्ञानं विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
* संवादी लेखक का ईमेल – pranayprasoonpandey@gmail-com

जलवायु परिवर्तन का सीधा असर हमारी खेती पर देखने को मिल रहा है जिस प्रकार आज वर्षा मे एक अकस्मात परिवर्तन हुआ है उससे दिन प्रतिदिन जल का स्तर घटता जा रहा है और इस घटते जल स्तर मे अधिक आमदनी के लिए फल–बगीचे लगाकर आप अधिक आमदनी प्राप्त कर सकते है । फलदार पौधों की पैदावार उसकी रोपाई एवं देखभाल की विधि पर निर्भर करती है इसलिए फसल की अच्छी पैदावार के लिए पूरी सावधानी और गड्ढों की पूर्ण तयारी करके पौधों को लगाना चाहिए |

अ) गड्ढे खोदने का समय

फलदार पौधे प्रयाह वर्षा के ऋतू मे लगाये जाते है, इसलिए गड्ढे खोदने का उपयुक्त समय मई – जून माह का होता है, क्योकि इस समय अत्यधिक गर्मी पड़ने से गड्ढे तप जाते है जिससे मृदा मे उपस्थित बीमारी के जिवाणु एवं कीड़े आदि मर जाते है जो फसल के लिए नुकसानदायक हो सकते है । अगर सिचांई की अच्छी सुविधा हो तो फरवरी दृ मार्च मे पौधे की रोपाई की जा सकती है तथा पौधे अगर इस समय लगावे तो गड्ढे पौधे लगाने के १५ से २० दिन पहले खोद ले ।

ब) गड्ढे का आकार

गड्ढे खोदने से पहले यह ज्ञात होना आवश्यक है की कौन से पौधे को लगाना है तथा उसके उपर्युक्त गड्ढे का आकार क्या होना चाहिए। बड़े पौधो जैसे आम, आवला, बेलपत्र, संतरा, किन्नो बेर, अनार, अमरुद आदि के लिए गड्ढे का आकार ३ फीट लम्बा, चौड़ा एवं २ फीट गहरा होना चाहिये वहीं पपीते मे गड्ढे आकार डेढ़ फीट लम्बा, चौड़ा एवं डेढ़ फीट होना जरूरी होता है ।

स) गड्ढे को भरना

खुदे हुए गड्ढे की मिटटी मे से पत्थर सुखी एवं हरी घास कंकड़, आदि को निकल कर अलग कर लें एवं गड्ढे को १५ से २० दिन तक खुला छोड़ दे जिससे उसमे उपस्थित सभी जीवाणु व कीड़े आदि अधिक ताप के कारण नस्ट हो जाये । अब गड्ढे को भरने के लिए उपर की डेढ़ फीट मिटटी मे मिंगणी की या सड़ी गोबर की खाद के साथ एक किलो सुपर फास्फेट को अच्छी तरह से मिलाये ।

यदि खेत की मिटटी काली या भरी होतो ऐसे गड्ढे मे एक तिहाई भाग खेत की मिटटी, एक तिहाई भाग बालू एवं एक तिहाई गोबर या मिंगणी की खाद को अच्छी तरह से मिलकर भरना चाहिए । दीमक से बचाव के लिए गड्ढे मे १.५ प्रतिशत क्युनालफास चूर्ण १०० ग्राम प्रति गड्ढों मे डालने से बचा जा सकता है । यह भी ध्यान रखे की गड्ढे भूमि की सतह से कुछ ५ दृ ७ अंगुल ऊपर तक भरना चाहिए जिससे सिचाई के बाद मिट्टी के बीच उपस्थित वायु निकलने पर भी पौधे को अच्छी तरह से मजबूती मिली रहे । यदि वर्षा ऋतू नहीं है और वर्षा न हो रही हो तो गड्ढे भरने के बाद सिचाई अवश्य कर दे ताकि गड्ढो की मिटटी बैठ जाये व बीच मे उपस्थित हवा निकल जाये ।

द) गड्ढों मे पौधे लगाना

फल देने वाले फलदार पौधों के लिए वर्षा (जुलाई – अगस्त) तथा बसंत (फ़रवरी – मार्च) की ऋतू अत्यंत अनुकूल होती है ।

खोदे गए गड्ढों मे प्रायः १ से डेढ़ वर्ष के आयु के पौधों को ही लगाना चाहिए । अगर पपीता लगाते है तो इसका पौधा ३ से ४ माह बाद ही लगाने योग्य हो जाता है । पौधे को लाने के बाद उसे छाया मे रखे व् तुरंत पानी अवश्य दे । पौधे को पोलीथिन की थैली से सावधानी पूर्वक निकल ले तथा उसपर लिपटी घास को भी सावधानी पूर्वक हटा ले ।अब तैयार गड्ढे मे से पौधे मे लगी मिटटी जितनी मिटटी को हटावे फिर पौधे को उसमे लगा कर मिटटी को पुनः अच्छी तरह से दबा दे जिससे पौधे और गड्ढे की मिट्टी मिल जाये और बीच मे हवा न रहने पाए ।

चिकनी कठोर मिटटी की पिंडली हो तो पौधे लगाने से पहले पिंडली को थोडा भिगो कर ढीला करे फिर उसमे पौधे लगा कर तुरंत पानी दे । पौधा लगाने के बाद उसके चारो ओर से तनों के किनारे ढलान बना देना चाहिए जिससे सिचांई का पानी तने के पास रुके नहीं । यह हमेशा ध्यान रहे की पौधा गड्ढे मे सीधा लगा हो । यदि पौधे मे पेम चढ़ा हो (बडेड/ ग्राफ्तेड) हो तो उस जोड़ को भूल कर भी मिटटी मे न दबाये । बाकि गड्ढों मे पौधों को ऐसे लगाये की सभी एक सीध मे नज़र आये । हमेशा पौधे सायंकाल मे लगाये ताकि रत मे पौधे की मिटटी मे नहीं रहने से पौधे की जड़ें जमीन मे अच्छी तरह से जम जाये ।

य) पौधों की देखभाल

सामान्यतः एक माह के भीतर ही पौधे मिट्टी को पकड़ लेते और उनमे वृद्धि दृश्य होने लगती है । गड्ढों मे फलो वाले पौधे लगाने के बाद सिचाई आवश्यक होती है । पौधे को गड्ढों मे लगाने के बाद शुरु के ३ – ४ दिन तक रोज थोडा पानी जरुर देते रहे उसके बाद एक दिन छोड़े फिर पानी दे उसके बाद एक सप्ताह बाद पानी दे और सिर्फ इतना ही पानी दे की मिटटी मे नमी बनी रहे और यदि वर्षा हो जाये तो पौधे को पानी न दे, और सबसे महत्वपूर्ण बात का ध्यान रखे की जमीन से कलमी जोड़ के बीच से निकलने वाली सभी देशी फटानो को ६ माह बाद ही तोड़े, क्योकि इसकी पत्तियां पौधों के लिए भोजन बनाती रहे और पौधों को मजबूती मिल जाये ।

र) पाले व लू से बचाव

नए पौधे लगाने के बाद शुरू के २ साल तक उन्हें पाले व लू से बचाने का उपाय करने होतीा क्योकि पौधे अभी छोटे व कमजोर होते है जिससे उनपर पाले व लू का जल्द असर होता है । इससे बचाने के लिए पौधे के चारो ओर घास, खीपं , कैर, कूचा आदि की टाटीयों को बांध देना चाहये तथा टाटीयों का दक्षिण– पूर्वी भाग खुला रखना चाहिए जिससे सर्दियों मे धुप आती रहे व गर्मियों मे लू से बचा जा सके ।

पाले से बचाव हेतु सल्फुयरिक अम्ल (गंधक का तेजाब) का ०.५ प्रतिशत १ एम० एल० प्रति लीटर पानी मे मिला कर १५ दिन के अंतराल पर २ से ३ बार छिडकाव कर दिया जाये तो पौधे को पाले से बचाया जा सकता है छिडकाव के लिए हमेशा प्लास्टिक का स्प्रेयर ही काम मे ले और यद् रहे की यह कपडे या शरीर पर न पड़े ।

ल) दीमक से बचाव

दीमक से पौधे को बचाने के लिए फिप्रोनिल ५ एससी, क्लोरोपयरिफास (२० इ० सी०) को बताये अनुसार काम मे लें द्य किसी भी दवा का छिडकाव या उसको डालने के लिए सर्वप्रथम कृषि विस्तार कार्यकर्ता

या कृषि विभाग / उद्यान विभाग/ कृषि विज्ञानं केंद्र के अधिकारियो से जरुर संपर्क करे तथा उसने इसके बारे मे जरुर जानकारी लें ।

व) अन्य उपयोगी जानकारियां

१. पौधे की अच्छी पैदावार के लिए उसमे प्रतिवर्ष नियमित रूप से बताये गये अनुपात मे उर्वरक एवं खाद को अवश्य डाले ।

२. प्रथम २ वर्ष बताये गये उर्वरक के अनुपात की मात्रा को वर्ष मे २ बार (जुलाई – अगस्त तथा फ़रवरी – मार्च) मे बराबर – बराबर बाट कर देना चाहिए जिससे उर्वरक की मात्रा का पूर्ण उपयोग हो सके ।

३. जब पौधों मे फूल आने लगे तो सिंचाई बंद कर दें, नहीं तो इस समय सिचांई से फूलो व फलों का गिरना बढ़ जाता है जिससे पैदावार पर असर होगा और वह कम हो जाएगी ।

निष्कर्ष

कृषि और उसकी पैदावार का सम्पूर्ण लाभ बिना उसके रोपाई के सही तरीके और उसके परस्पर देखभाल के संभव नहीं है । सिचाई को प्राथमिक जिम्मेदारी के साथ सही पोषक प्रबंधन व उपरोक्त तरीके से देखभाल किया जाये तो कृषि से आपेक्षित लाभ दूर नहीं है ।